ज़िन्दगी धुँआ हुई

राधवेन्द्र प्रताप सिंह के जनगीत

'अभिनव क़दम' कविता पुस्तिका–1

जिन्दगी धुँआ हुई

राघवेन्द्र प्रताप सिंह

अभिनव क़दम की ओर से जारी
प्रथम काव्य- पुस्तिका

© राघवेन्द्र प्रताप सिंह (मार्फत अभिनव क़दम)

❖ ज़िन्दगी धुँआ हुई (जनगीत)

❖ ✍ राघवेन्द्र प्रताप सिंह

❖ मंथन (साहित्यिक – सांस्कृतिक संस्था) से प्रकाशित

❖ सम्पर्क – जयप्रकाश 'धूमकेतु' – 223,प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा, मऊ– 275101
✆ 0547–223113

❖ प्रथम सस्करण – 2000

❖ आवरण– राजेश

❖ मूल्यः 15 रूपये मात्र (अभिनव क़दम 2–3 के साथ निःशुल्क)

❖ कम्पोजिंग– ईस्टर्न कम्प्यूटर सेंटर, 278, पावर हाऊस रोड, निजामुद्दीनपुरा, मऊ– 275101, ✆ 223268

❖ मुद्रक– सरफराज आफसेट प्रेस, सईदी रोड, मऊ, ✆ 221708

दो शब्द

हिन्दी–गीत की विकास–यात्रा के कई पड़ाव हैं। निराला के पास आकर गीतों ने एक नया कलेवर धारण किया। अपने शैल्पिक रचाव तथा कथ्य की नवीनता की दृष्टि से हिन्दी नवगीत का उद्‌भव निराला से ही माना जाता है। 'नवगीत' के नामकरण का श्रेय 'गीतांगिनी' के संपादक राजेन्द्र प्रसाद सिंह को जाता है। १९५८ (गीतांगिनी के प्रकाशन काल) से ७३ तक का समय नवगीत की यात्रा का समय है। नवगीत को व्यापक फलक देने वाले कवियों में वीरेन्द्र मिश्र, शलभ श्री राम सिंह, देवेंद्र कुमार, रमेश रंजक, शम्भूनाथ सिंह, माहेश्वर तिवारी, गुलाब सिंह, बुद्धिनाथ मिश्र, श्रीकृष्ण तिवारी, अमरनाथ श्रीवास्तव और उमाशंकर तिवारी प्रमुख रहे हैं। सन् ७३ नवगीत का विश्राम बिन्दु है। सन् १९७४ में 'सम्पूर्ण क्रांति' के नारे के साथ ही एक जनतांत्रिक भावबोध की गीताभिव्यक्ति जनगीत अथवा जनवादी गीत के रूप में सामने आयी जो अपनी जनोन्मुखता के साथ आज तक चली आ रही है। इन जनतांत्रिक मूल्यों के पक्षधर रमेश रंजक और गोरख पाण्डे के गीतों को व्यापक जन समर्थन मिला है।'

इन्हीं मूल्यों और लोक परंपरा की छान्दिक संरचना को नया मुहावरा देते हुए अपनी अग्निधर्मी क्षमता के साथ राघवेन्द्र प्रताप के गीत नयी जमीन लिये हुए सामने आ रहे हैं। एक ही नगर में एक साथ रहते हुए और एक मंच से जुड़े होने की वजह से मैं इनकी रचना प्रक्रिया का साक्षी हूँ इसलिए नि:संकोच कह सकता हूँ कि सर्जनात्मक लेखन के क्षेत्र में जनधर्मी गीतकार राघवेन्द्र प्रताप सिंह की रचनात्मक उपादेयता सहज स्वीकार है। कम उम्र में इन्होंने कम लिखा है, लेकिन मजबूत लिखा है। अदम गोंडवी के शब्दों में, "जहाँ तक मैं समझता हूँ जनधर्मी गीतों के धरातल पर रमेश रंजक और गोरख पाण्डे के बाद अगर कोई मजबूत गीतकार सामने आया है तो वह राघवेन्द्र प्रताप हैं।"

राघवेन्द्र के गीतों का विषय जहाँ श्रमजीवी, किसान, मजदूर, बुनकर, गरीब दलित शोषित और आम आदमी की त्रासदी से जुड़ा है वहीं उनके गीतों का परिवेश जाड़े की

ठिठुरती रातों, दिन का घना कुहरा, चिलचिलाती धूप और विनाशकारी बाढ़ का चित्र देता है। इनके गीतों में अगर चुप्पियाँ, उपवास, आँसू, भूख, हाथ की खाली कटोरी, बुझा चूल्हा और दानवी अभावों से जूझते हुए भाभी के बचे–खुचे गहने हैं तो वहीं विरोध करता मन और सवाली आँखें भी हैं। जहाँ अगले पखवाड़े की सोचता हुआ 'रामदीन', कंडे सुलगाती 'रामरती' रोपनी से थके पाँव आती बनिहारिन, पाँव की बिवाइयों का हिसाब लेती 'रधिया' घसियारिन, पीठ पर बोरी लादे नाली से कचरा बीनता बच्चा, मोतियाबिन्द भरी आँखों में धुँआ लिए मिल से लौटता मजदूर और कंधों पर लाश की मानिन्द डिग्रियाँ उठाये बेरोजगारों के उदास चेहरे हैं, वहीं झूठे आश्वासनों और कागज़ी आँकड़ों की थोथी गवाही पर इतराता हुआ संसद का बेनकाब चेहरा भी है। इस गरीबी, अभाव, अन्याय और अत्याचार से पनपी संवेदना – जो अपनी स्थानीयता के दायरे तोड़ती हुई समूचे वैश्विक सच से जुड़ती है – कोरी भावुकता भर नहीं है बल्कि निहत्थे लोगों की पक्षधर यह संवेदना राघवेन्द्र के जनगीतों में हथियार की तरह आती है।

उनके पास समृद्ध रचना संसार के साथ संवेदनशील धड़कता हुआ हृदय है यह बात उनकी भाषा, उनके मुहावरे और काव्य बिम्बों के मद्देनजर कहा जा सकता है। उनके यहाँ संस्कृति विवेक अपनी सम्पूर्णता के साथ मौजूद है। राघवेन्द्र की लेखकीय उपस्थिति का सामाजिक सरोकार बनता है। संक्षेप में जोखिम और चुनौतियों से भरे इस अँधेरे समय में अपने से ऊपर उठकर अपने गीतों में राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने समय और तात्कालिकता को पहचानने की सफल कोशिश की है।

दो दशकों की मऊ की साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों की आँच में पककर पैदा हुई हैं 'ज़िन्दगी धुँआ हुई' की कविताएँ। जिनकी परोसे जाने की जरूरत को महसूस करते हुए अभिनव क़दम ने पाठकों के सामने इसे ले जाने का काम किया है।

जय प्रकाश 'धूमकेतु'

अनुक्रम

कविता	पृष्ठ
१. ज़िन्दगी धुँआ हुई	६
२. रोशनी के बहाने	८
३. घर के हालात	१०
४. चुप्पी की खड़ी पाई	१२
५. दौर परेशानी का	१४
६. एक—एक पल सदी हुए	१६
७. मैं अकेला नाव का माझी	१८
८. किसकी मात हुई	२०
९. भाग्य की तीलियाँ	२२
१०. मन विरोध करता है	२४
११. सवाल मेरा	२७
१२. कोशिश की थी	२८
१३. छल गये कहीं	३०
१४. सवाली आँखें	३२
१५. जागे हुए अंगार	३४
१६. प्रवास के दिन	३६
१७. पथरायी आँखों के आगे	३८
१८. क्यों	३९
१९. रिश्तों के गलत सिलसिले	४०
२०. दायरे रोज तोड़े जायेंगे	४२
२१. अपना अनुवाद कर रहा हूँ	४४
२२. याद है	४६
२३. सामने लगाम लिये लोग	४८
२४. संसद बस आँकड़ा देखती है	५०
२५. नयी सदी का विज्ञापन	५२
२६. रेतीले रिश्तों का क्या	५४
२७. आँकड़े यही कहते	५५
२८. रामदीन	५६

ज़िन्दगी धुँआ हुई

ज़िन्दगी धुँआ हुई
हिसाब जब लगाती है,
रामरती चूल्हे में
कंडे सुलगाती है।

बच्चों की आँख
बुदबुदा रही पतेली पर,
हाथ में कटोरे हैं,
खुरदुरी हथेली पर

टूट रही की
लकीर को मिलाती है।

रात हुई, गंध आ रही
कच्ची ताड़ी की,
अदहन सी खौल रही
बाँह में जुआड़ी की,

बेंत के निशान सुबह
पीठ पर छुपाती है।

बेटा बीमार, एक बार
आँख खोला था,
सूख गया, आँगन का
आख़िरी अमोला था,